dk'kh fgUn fo'ofo|ky;
lpuk ,o tulEid dk;ky;
i:l] ifCyd'ku ,.M ifCyflVh l:y

दिनांकः 27.01.2009

i:l&foKfIr&III

i;koj.k ,o lrr` fodkl lLFkku

काषी हिन्दू विष्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर धीरेन्द्र पाल सिंह ने 8 मई, 2008 को पद भार ग्रहण करने के उपरांत पहले दिन ही आयोजित प्रेस वार्ता में कहा था कि वे काषी हिन्दू विष्वविद्यालय में 'पर्यावरण एवं सतत् विकास संस्थान' को स्थापित होते देखना चाहते हैं। 11वीं पंचवर्षीय योजना में विष्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा काषी हिन्दू विष्वविद्यालय को दिए गए अनुदान में 'पर्यावरण एवं सतत् विकास संस्थान' की स्थापना के लिए 7.50 करोड़ रूपयों का विषेष रूप से आवंटन किया गया है। इस संस्थान की कुछ प्रमुख तथ्यगत विषेषताएं निम्नलिखित हैं।

- 'पर्यावरण एवं सतत् विकास संस्थान' काषी हिन्दू विष्वविद्यालय के संस्थानों में प्रौद्योगिकी संस्थान (1971), चिकित्सा विज्ञान संस्थान (1971) तथा कृषि विज्ञान संस्थान (1980) के उपरांत चौथा संस्थान है जो लगभग 30 वर्षों के उपरांत स्थापित होगा।
- सतत् विकास को एक ऐसे विकास के रूप में परिभाषित किया जाता है जो वर्तमान आवष्यकताओं को भावी पीढ़ीयों की अपेक्षाओं से समझौता किए बिना पूरा करता है। इसके लिए ज्ञानवान तथा सक्रिय नागरिकों, तथा जिम्मेदार एवं जानकार नीतिनिर्माताओं की आवष्यकता होती है जो मानव समाज के सम्मुख उपस्थित आर्थिक, सामाजिक तथा पर्यावरण के गूढ़ तथा आंतरिक सम्बन्धों के आधार पर समुचित निर्णय ले सकें।
- संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2005–2014 को सतत् विकास हेतु षिक्षा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय दषक के रूप में घोषित किया है। काषी हिन्दू विष्वविद्यालय परिसर में 'पर्यावरण एवं सतत् विकास संस्थान' की स्थापना, इस दषक को मनाने का एक अत्यंत उपयुक्त प्रयास होगा।
- संस्थान के द्वारा सतत् विकास के बारे में षिक्षा (इसमें शामिल मुद्दों के बारे में जानकारी विकसित करना) तथा सतत् विकास *के लिए* षिक्षा (सततता प्राप्त करने के लिए षिक्षा एक हथियार के रूप में उपयोग) दी जाएगी।
- इन शैक्षिक प्रयासों से लोगों के व्यवहार में उपयुक्त परिवर्तन को प्रोत्साहन मिलेगा जिससे पर्यावरण अखण्डता, आर्थिक व्यवहार्यता तथा वर्तमान तथा भावी पीढ़ीयों के लिए एक न्यायसंगत समाज का निर्माण होगा।
- यह संस्थान वैष्विक सतत् विकास लक्ष्यों की पूर्ति हेतु महत्वपूर्ण वैज्ञानिक तथा समाजिक मुद्दों पर मार्गदर्षक अनुसंधानों द्वारा बेहतर समझ विकसित करने के उद्देष्य को समर्पित होगा। इस संस्थान की स्थापना को पर्यावरण एवं सतत विकास के क्षेत्र में षिक्षण, अनुसंधान एवं प्रसार के लिये विष्वविद्यालय की पहल के रूप में देखा जा सकता है। यह संस्थान विष्वविद्यालय के सतत् विकास के अन्तरनिहित क्षेत्रों में कार्यरत विभिन्न विभागों के षिक्षकों को एक सामूहिक साझा मंच प्रदान करेगा जिससे वे अपने अनुसंधान के परिणामों, अनुभवों तथा विधियों एवं कार्यनीतियों को एक दूसरे से बांट सकेंगे।
- भारत के सतत विकास में षिक्षा, अनुसंधान तथा प्रसार कार्यक्रमों के द्वारा योगदान देना इस संस्थान का महान लक्ष्य है जिससे देष में निर्धनता कम होगी एवं प्राकृतिक संसाधनों का विवेक सम्मत दोहन होगा।
- पर्यावरण तथा सतत् विकास के क्षेत्र में सतत् विकास एक मुख्य संघटक के रूप में शामिल करने के लिए विभिन्न विष्वविद्यालयों हेतु पाठ्यक्रम, अन्तर्विषयी षिक्षा हेतु पाठ्यक्रम तथा क्रियाकलाप विकसित करने में तथा पी0एच0डी0, एम0एस0सी0, डिप्लोमा तथा प्रमाणपत्र उपाधियों की षिक्षा द्वारा संस्थान अपना योगदान देगा।
- अनुसंधान की पांच प्राथमिकताएंः वायुमण्डलीय प्रदूषण तथा भूमण्डलीय परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन, सतत् कृषि, वैकल्पिक ऊर्जा संसाधन तथा सतत् विकास के समाजिक–आर्थिक तथा वैधानिक आयाम।

p:;jeu